एम.एच.डी.-14

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2008

एम.एच.डी.-14 : हिन्दी उपन्यास-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *पहला और छठा प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) विवाह एक धार्मिक व्रत है, एक आत्मिक प्रतिज्ञा है । जब हम गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करते हैं, जब हमारे पैरों में धर्म की बेड़ी पड़ती है, जब हम सांसारिक कर्त्तव्य के सामने अपने सिर को झुका देते हैं, जब जीवन का भार और उनकी चिन्ताएँ हमारे सिर पर पड़ती हैं; तो ऐसे पवित्र संस्कार पर हमको गाम्भीर्य से काम लेना चाहिए । यह कितनी निर्दयता है जिस समय हमारा आत्मीय युवक ऐसा कठिन व्रत

धारण कर रहा हो, उस समय हम आनन्दोत्सव मनाने बैठें । वह इस गुरुतर भार से दबा जाता हो और हम नाच-रंग में मस्त हों । अगर दुर्भाग्य से आजकल यही उलटी प्रथा चल पड़ी है, तो क्या आवश्यक है कि हम भी उसी लकीर पर चलें ? शिक्षा का कम-से-कम इतना प्रभाव तो होना चाहिए कि धार्मिक विषयों में हम मूर्खों की प्रसन्नता को प्रधान न समझें ।

(ख) हम ज़मींदार हैं, साहूकार हैं, वकील हैं, सौदागर हैं, डॉक्टर हैं, पदाधिकारी हैं । इनमें कौन जाति की सच्ची वकालत करने का दावा कर सकता है ? आप जाति के साथ बड़ी भलाई करते हैं, तो कौंसिल में अनिवार्य शिक्षा का प्रस्ताव पास करा देते हैं । अगर आप जाति के सच्चे नेता होते, तो यह निरंकुशता कभी न करते । कोई अपनी इच्छा के विरुद्ध स्वर्ग भी नहीं चाहता । हममें तो कितने ही महोदयों ने बड़ी-बड़ी उपाधियाँ प्राप्त की हैं । पर इस उच्च शिक्षा ने हममें सिवा विलास-लालसा और सम्मान-प्रेम, स्वार्थ-सिद्धि और अहम्मन्यता के और कौन-सा सुधार कर दिया ।

(ग) लज्जा अत्यन्त निर्लज्ज होती है । अंतिम काल में भी जब हम समझते हैं कि उसकी उलटी साँसें चल रही हैं, वह सहसा चैतन्य हो जाती है, और पहले से भी अधिक कर्त्तव्यशील हो जाती है । हम दुरवस्था में पड़कर किसी मित्र से सहायता की याचना करने को घर से निकलते हैं, लेकिन मित्र से आँखें चार होते ही लज्जा हमारे सामने आकर खड़ी हो जाती है और हम इधर-उधर की बातें करके लौट आते हैं । यहाँ तक कि हम एक शब्द भी ऐसा मुँह से नहीं निकलने देते, जिसका भाव हमारी अंतर्वेदना का द्योतक हो ।

(घ) वह लालसा, जो आज सात वर्ष हुए, इसके हृदय में अंकुरित हुई थी, जो इस समय पुष्प और पल्लव से लदी खड़ी थी, उस पर वज्रपात हो गया । वह हरा-भरा लहलहाता हुआ पौधा जल गया — केवल उसकी राख रह गई । आज ही के दिन पर तो उसकी समस्त आशाएँ अवलंबित थीं । दुर्दैव ने आज वह अवलंब भी छीन लिया । उस निराशा के आवेश में उसका ऐसा जी चाहने लगा कि अपना मुँह नोच डाले । उसका वश चलता, तो वह चढ़ाव को उठाकर आग में फेंक देती । कमरे में एक आले पर शिव की मूर्ति रखी हुई थी । उसने उसे उठाकर ऐसा पटका कि उसकी आशाओं की भाँति वह भी चूर-चूर हो गई ।

2. प्रेमचंद के उपन्यास-साहित्य का परिचय दीजिए । *10*

3. 'सेवासदन' में व्यक्त सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य का विश्लेषण कीजिए । *10*

4. 'प्रेमाश्रम' के औपन्यासिक शिल्प की समीक्षा कीजिए । *10*

5. रंगभूमि के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । *10*

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×5=10*

   (i) प्रेमचंद की भाषा

   (ii) 'ग़बन' में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

   (iii) 'रंगभूमि' के अंग्रेज़ पात्र

   (iv) प्रेमचंद की दलित चेतना